Sanvahak (संवाहक)
A Peer Reviewed, Refereed, Multidisciplinary (All Discipline/Subjects), Multilingual (All Languages) & Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-2; Issue-2 (April-June) 2026
Page No.- 49-56
©2026 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's:

Dr. Gautam kumar
Bhupendra Narayan Mandal University, Madhepura, Bihar.

Corresponding Author :

Dr. Gautam kumar
Bhupendra Narayan Mandal University, Madhepura, Bihar.

भारतीय आजादी की लड़ाई में युवाओं का योगदान : पटना सचिवालय के सात शहीदों का एक विशेष अध्ययन

सार (Abstract) : भारत की आजादी की लड़ाई सिर्फ बड़े नेताओं या राजनीतिक दलों तक ही सीमित नहीं थी। इसमें देश के आम लोगों, किसानों, मजदूरों, महिलाओं और खासकर युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। युवाओं ने अपने जोश, हौसले और कुछ कर गुजरने की भावना से इस आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाया। साल 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में युवाओं का यह रूप सबसे ज्यादा निखरकर सामने आया। इस दौरान देश के कोने-कोने में छात्रों और युवाओं ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया, सरकारी जगहों का बहिष्कार किया और आजादी की मांग को और तेज कर दिया।

पटना सचिवालय के सात शहीदों की कहानी भारतीय इतिहास का एक बेहद गौरवशाली और भावुक पन्ना है। अगस्त 1942 में जब पूरे देश में 'भारत छोड़ो आंदोलन' की आग धधक रही थी, तब पटना के छात्र और युवा भी अंग्रेजों के खिलाफ उठ खड़े हुए। पटना सचिवालय (Secretariat) की इमारत पर तिरंगा फहराने की कोशिश कर रहे इन निहत्थे छात्रों पर ब्रिटिश पुलिस ने अंधाधुंध गोलियां चला दीं, जिसमें सात युवा मौके पर ही शहीद हो गए। इन युवाओं का यह सर्वोच्च बलिदान पूरे बिहार में देशभक्ति और अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष की एक नई मिसाल बन गया।

यह शोध पत्र इसी बात का विश्लेषण करता है कि आजादी की लड़ाई में युवाओं की क्या भूमिका थी और पटना सचिवालय के इन सात शहीदों ने इतिहास को कैसे प्रभावित किया। इस लेख में युवाओं की राजनीतिक समझ, छात्र आंदोलनों का असर, बिहार में आजादी की लड़ाई का माहौल और इन सात शहीदों के योगदान को गहराई से समझने की कोशिश की गई है। साथ ही, यह भी देखा गया है कि कैसे उनके इस बलिदान ने देश की आजादी के आंदोलन में एक नई जान फूंक

दी थी।

मुख्य शब्द (Keywords) : आजादी की लड़ाई, युवा शक्ति, छात्र आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, पटना सचिवालय, सात शहीद, देशभक्ति, बिहार।

प्रस्तावना : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को दुनिया के सबसे बड़े और लंबे समय तक चलने वाले आंदोलनों में गिना जाता है। यह लड़ाई सिर्फ राज गद्दी बदलने या सत्ता हथियाने के लिए नहीं थी, बल्कि यह देश के मान-सम्मान, समाज को जगाने और हर हिंदुस्तानी को एक करने की लड़ाई थी। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ समाज के हर वर्ग ने अपनी ताकत झोंक दी थी, लेकिन इनमें युवाओं का जज्बा सबसे अलग और खास था। इतिहास गवाह है कि जब-जब देश में आजादी की अलख धीमी पड़ी, युवाओं ने अपने जोश से उसे फिर से जिंदा कर दिया।

युवाओं को हमेशा से समाज में बदलाव लाने वाला माना जाता है। उनके पास ऊर्जा होती है, कुछ नया करने का साहस होता है और वे किसी भी खतरे से डरते नहीं हैं। यही वजह थी कि आजादी की लड़ाई में कूद रही यह युवा शक्ति अंग्रेजों के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द बन चुकी थी। स्कूल और कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र अपनी पढ़ाई-लिखाई छोड़कर सड़कों पर उतर आए। कईयों ने कॉलेज छोड़ दिए, जेल की हवा खाई और बहुत से युवाओं ने हंसते-हंसते देश के लिए अपनी जान तक दे दी।

बीसवीं सदी की शुरुआत में जब देश में आंदोलन बड़ा रूप ले रहा था, तब छात्र भी राजनीति और देश के हालातों को लेकर जागरूक होने लगे थे। चाहे गांधी जी का असहयोग आंदोलन हो, सविनय अवज्ञा आंदोलन हो या फिर 'भारत छोड़ो आंदोलन', हर बार युवाओं की तादाद पहले से ज्यादा बढ़ी। साल 1942 का दौर तो पूरी तरह युवाओं के नाम रहा। जब अंग्रेजों ने देश के लगभग सभी बड़े नेताओं को जेल में डाल दिया, तब आंदोलन की कमान इन्हीं स्थानीय युवाओं और छात्रों ने अपने हाथों में ले ली।

इस पूरे आंदोलन में बिहार की भूमिका बेहद खास रही है। बिहार के लोगों में देशप्रेम का जज्बा हमेशा से कूट-कूट कर भरा था। यहाँ के छात्र और युवा हर आंदोलन में सबसे आगे खड़े मिलते थे। गाँवों से लेकर शहरों तक, हर जगह युवाओं की टोलियाँ सक्रिय थीं। खासकर पटना, गया, भागलपुर, मुजफ्फरपुर और शाहाबाद जैसे इलाकों में युवाओं ने आंदोलन को बहुत मजबूती से संभाला। पटना उस समय इन सभी राजनीतिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र हुआ करता था।

1942 में जब 'भारत छोड़ो आंदोलन' का बिगुल बजा, तो पटना के छात्रों ने अंग्रेजों के नाक में दम कर दिया। सचिवालय की मुख्य इमारत पर तिरंगा फहराने की जिद इसी गुस्से का एक उदाहरण थी। यह सिर्फ एक कपड़ा फहराने की कोशिश नहीं थी, बल्कि सीधे ब्रिटिश सरकार की ताकत को दी गई एक खुली चुनौती थी। इस चुनौती से बौखलाकर अंग्रेज प्रशासन ने गोलियां चलवा दीं, जिसमें सात युवा छात्र शहीद हो गए। इस दर्दनाक लेकिन साहसी घटना ने पूरे देश के लोगों के खून में उबाल ला दिया।

पटना सचिवालय के इन सात शहीदों की कहानी इस बात का सबसे बड़ा सबूत है कि आजादी सिर्फ मंचों पर दिए गए भाषणों या रणनीतियों से नहीं मिली, बल्कि इसके पीछे हमारे युवाओं का खून और उनका निस्वार्थ त्याग था। इन शहीदों ने अपने करियर और अपनी जिंदगी से ऊपर देश को रखा और आने वाली पीढ़ियों के लिए देशभक्ति की एक ऐसी मिसाल कायम की, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं की भूमिका : आजादी की लड़ाई में युवाओं का इस तरह अचानक कूद पड़ना कोई इत्तेफाक नहीं था। इसके पीछे सालों से तैयार हो रही एक जमीन थी। उन्नीसवीं सदी के आखिरी सालों और बीसवीं सदी की शुरुआत में जैसे-जैसे देश में आधुनिक शिक्षा बढ़ी, अखबार लोगों तक पहुँचे और देशप्रेम की बातें होने लगीं, वैसे-वैसे युवाओं की सोच भी बदलने लगी। पढ़े-लिखे नौजवान यह साफ देख पा रहे थे कि अंग्रेज किस

तरह देश को लूट रहे हैं और भारतीयों के साथ कैसा भेदभाव कर रहे हैं।

साल 1905 में जब अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन (बंग-भंग) किया, तब देश के छात्रों का गुस्सा फूट पड़ा। इस 'स्वदेशी आंदोलन' ने युवाओं के भीतर छिपी देशभक्ति को बाहर निकाला। कॉलेजों और यूनिवर्सिटीज के छात्र अंग्रेजी सामानों के बहिष्कार (बायकाट) की कमान संभालने लगे, जगह-जगह सभाएं करने लगे और लोगों को जगाने में जुट गए। धीरे-धीरे यह आग पूरे देश में फैल गई।

इसके बाद 1920 में जब महात्मा गांधी ने 'असहयोग आंदोलन' शुरू किया, तो युवा शक्ति सीधे तौर पर मुख्यधारा के आंदोलन से जुड़ गई। गांधी जी के एक आह्वान पर हजारों छात्रों ने सरकारी स्कूलों और कॉलेजों को लात मार दी और देश के अपने (राष्ट्रीय) शिक्षण संस्थानों में पढ़ने चले गए। यहाँ से युवा सिर्फ आंदोलन का हिस्सा नहीं रहे, बल्कि वे इसे चलाने वाले मुख्य सिपाही बन गए। इसी दौर में देश भर में युवाओं और छात्रों के कई संगठन और ग्रुप बनने शुरू हुए, जिन्होंने आगे चलकर इतिहास बदल दिया।

असहयोग आंदोलन से भारत छोड़ो आंदोलन तक युवाओं की भूमिका : आजादी के आंदोलन में युवाओं की हिस्सेदारी धीरे-धीरे और मजबूत होती चली गई। शुरू-शुरू में यह लड़ाई कुछ पढ़े-लिखे बड़े नेताओं और संस्थाओं तक ही सीमित थी, लेकिन जैसे-जैसे समय बीता, स्कूल-कॉलेज के छात्र और नौजवान इससे भारी तादाद में जुड़ते गए। इन युवाओं ने खुद को सिर्फ नेताओं के भाषण सुनने या नारे लगाने तक सीमित नहीं रखा, बल्कि वे इस आंदोलन को शहरों की तंग गलियों से निकालकर गाँवों के झोपड़ों तक ले गए।

जब साल 1920 में महात्मा गांधी ने **असहयोग आंदोलन (Non-Cooperation Movement)** शुरू किया, तब पहली बार देश का युवा खुलकर सड़कों पर उतरा। उस समय गांधी जी ने अपील की थी कि अंग्रेजों के चलाए जा रहे सरकारी स्कूलों और कॉलेजों को छोड़ दिया जाए। देश के हजारों युवाओं ने अपने भविष्य और नौकरी की परवाह किए बिना, एक झटके में सरकारी संस्थान छोड़ दिए और स्वदेशी या राष्ट्रीय कालेजों में दाखिला ले लिया। यह कोई छोटा फैसला नहीं था, क्योंकि इससे उनका पूरा करियर दांव पर लगा था, लेकिन देशप्रेम के आगे उन्हें अपना भविष्य छोटा लगा।

इसी दौर में युवाओं की सोच पूरी तरह बदल गई। अब वे सिर्फ किताबी कीड़ा बनकर या नौकरी की तलाश में रहने वाले नौजवान नहीं थे, बल्कि देश की बदहाली को देखकर उनका खून खौल रहा था। चाय की दुकानों, चौपालों और हॉस्टलों में बैठकर युवा देश के हालातों पर चर्चा करने लगे। उनके बीच यह बात साफ हो चुकी थी कि आजादी सिर्फ बड़े नेताओं के भरोसे बैठकर नहीं मिलेगी, इसके लिए हर एक जवान को खुद जिम्मेदारी उठानी होगी।

इसके बाद, साल 1930 के **सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobedience Movement)** के दौरान भी युवाओं का यह जोश बरकरार रहा। इस समय तक छात्र संगठन काफी मजबूत हो चुके थे। छात्र टोलियाँ बनाकर घूमते, पर्चे छापकर बांटते और आम जनता को आंदोलन से जोड़ते थे। अंग्रेजों ने लाठियां चलाईं, तो युवाओं ने हंसते-हंसते गिरफ्तारियां दीं और जेलों को भर दिया। युवाओं की इस ताकत ने आंदोलन में एक नई जान फूंक दी थी।

लेकिन युवाओं के संघर्ष का असली रुप साल 1942 में देखने को मिला। जब **'भारत छोड़ो आंदोलन' (Quit India Movement)** शुरू होते ही अंग्रेजों ने देश के सभी बड़े और नामचीन नेताओं को रातों-रात जेल में बंद कर दिया, तब आंदोलन बिल्कुल अनाथ सा हो गया था। ऐसे नाजुक वक्त में आंदोलन की पूरी कमान इन युवाओं, छात्रों और स्थानीय कार्यकर्ताओं ने अपने हाथों में ले ली। उन्होंने अंग्रेजों की संचार व्यवस्था ठप करने के लिए रेल की पटरियां उखाड़ दीं, डाक-तार की लाइनें काट दीं और सरकारी दफ्तरों पर ताले जड़ दिए। जगह-जगह जुलूस निकाले गए और अंग्रेजों को देश छोड़ने पर मजबूर किया जाने लगा।

नौजवानों के लिए यह सिर्फ कोई राजनीतिक ड्रामा नहीं था। उनके दिल-दिमाग में यह बात बैठ चुकी थी कि

गुलामी की बेड़ियों को अब हर हाल में काटना ही है। इसी जिद ने उन्हें पुलिस की लाठियां और गोलियां खाने का हौसला दिया।

बिहार में छात्र चेतना और युवाओं की सक्रियता : आजादी की इस लड़ाई में बिहार सिर्फ एक मूकदर्शक नहीं था, बल्कि यहाँ छात्र और युवा चेतना की एक जबरदस्त लहर चल रही थी। बिहार के कोने-कोने में छात्रों ने राष्ट्रीय आंदोलन को धार देने का काम किया। स्कूलों और कॉलेजों के कमरों से निकलकर देशभक्ति की भावना हवा में तैर रही थी।

उस दौर में बिहार में पढ़ाई-लिखाई के साधन बहुत कम थे, लेकिन जो मुट्ठी भर युवा पढ़ रहे थे, उनकी समझ बहुत पक्की थी। वे अखबारों की खबरों, देश-दुनिया की हलचलों और नेताओं के विचारों को बहुत गहराई से समझ रहे थे। ये छात्र छुट्टियों में जब अपने गाँवों या मोहल्लों में जाते, तो वहाँ लोगों को इकट्ठा करके अंग्रेजों की चालों के बारे में बताते और उन्हें जगाने का काम करते थे।

पटना, गया, मुज़फ्फरपुर और भागलपुर जैसे शहर इन गतिविधियों के मुख्य अड्डे बन चुके थे। खासकर पटना में छात्र संगठन बहुत ज्यादा एक्टिव हो चुके थे। कॉलेजों के लड़के रोज विरोध मार्च निकालते, देशभक्ति के गीत गाते और आम लोगों को झकझोरते थे कि वे भी इस लड़ाई में साथ आएं।

साल 1942 आते-आते माहौल में बारूद जैसा तनाव घुल चुका था। लोगों के सब्र का बांध टूट रहा था। अंग्रेजों का जुल्म, महंगाई, गरीबी और ऊपर से अपने पसंदीदा नेताओं की गिरफ्तारी ने बिहार के युवाओं को भीतर तक बेचैन कर दिया था। उन्हें समझ आ गया था कि अब घरों में बैठने का समय नहीं है, बल्कि आर-पार की लड़ाई का वक्त आ गया है। इसी गुस्से के बीच बिहार के छात्रों ने आंदोलन को और उग्र करने का फैसला किया।

पटना सचिवालय की घटना की पृष्ठभूमि : 1942 में जैसे ही 'भारत छोड़ो आंदोलन' भड़का, पूरे देश के साथ-साथ बिहार भी सुलग उठा। पटना के छात्रों और युवाओं ने एक ऐसा फैसला किया जिसने ब्रिटिश हुकूमत की नींव हिला दी। उन्होंने तय किया कि अंग्रेजी सत्ता की नाक कहे जाने वाले **पटना सचिवालय (Secretariat) भवन** पर तिरंगा फहराया जाएगा। उस जमाने में सचिवालय अंग्रेजों की ताकत और शासन का सबसे बड़ा प्रतीक था। इसलिए वहाँ झंडा फहराने का मतलब था—अंग्रेजी हुकूमत को उसकी औकात याद दिलाना और यह बताना कि अब तुम्हारी लाठी का डर खत्म हो चुका है।

यह ऐतिहासिक घटना **11 अगस्त 1942** की है। पटना का माहौल बेहद तनावपूर्ण था। चप्पे-चप्पे पर पुलिस का पहरा था और संगीनें तनी हुई थीं। लेकिन मौत के इस साये के बाद भी युवा पीछे हटने का नाम नहीं ले रहे थे। उनके दिमाग में बस एक ही बात चल रही थी कि देश के सम्मान के लिए अगर जान भी देनी पड़े, तो सौदा बुरा नहीं है।

छात्रों की एक टोली हाथों में तिरंगा थामे सचिवालय की तरफ बढ़ने लगी। जैसे-जैसे कदम आगे बढ़ रहे थे, 'इंकलाब जिंदाबाद' और 'भारत माता की जय' के नारों से आसमान गूंजने लगा। रास्ते में आम लोग भी इस काफिले से जुड़ते गए और देखते ही देखते एक बड़ा हुजूम खड़ा हो गया। अंग्रेज अफसर इस नजारे को देखकर बुरी तरह बौखला गए। उन्हें लगा कि अगर आज इन लड़कों ने सचिवालय पर झंडा फहरा दिया, तो उनकी साख मिट्टी में मिल जाएगी। पुलिस को तुरंत आदेश दिया गया कि इस भीड़ को किसी भी कीमत पर रोका जाए। जब लाठीचार्ज और आंसू गैस के गोलों के बाद भी ये निहत्थे लड़के पीछे नहीं हटे और तिरंगे को आगे बढ़ाते रहे, तब अंग्रेज कलक्टर के आदेश पर पुलिस ने सीधे अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। गोलियों की तड़तड़ाहट से पटना की धरती कांप उठी। कई युवा लहूलुहान होकर गिर पड़े। इस खूनी खेल में सात युवा छात्रों ने मौके पर या अस्पताल जाते-जाते अपने प्राण त्याग दिए। यह घटना बिहार के इतिहास का सबसे दर्दनाक लेकिन सबसे ज्यादा प्रेरणा देने वाला पन्ना बन गई।

पटना सचिवालय के सात शहीदों का क्रमबद्ध विवरण : पटना सचिवालय के इस गोलीकांड में जो सात लड़के

शहीद हुए, वे कोई बहुत बड़े अमीर या रसूखदार परिवारों के नहीं थे। वे बेहद साधारण और मध्यमवर्गीय घरों के आम छात्र थे। वे न तो कोई बड़े नेता थे और न ही राजनीति के खिलाड़ी; वे तो बस भारत माता के सच्चे सपूत थे जिनके दिलों में देश के लिए मर-मिटने का जज्बा था। यही सादगी उनकी शहादत को और ज्यादा महान और पूजनीय बनाती है।

इन सातों वीरों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए तिरंगे के सम्मान को झुकने नहीं दिया। जैसे ही एक छात्र को गोली लगती और वो गिरता, दूसरा छात्र दौड़कर तिरंगे को जमीन पर गिरने से पहले थाम लेता और आगे बढ़ जाता। उनकी इस शहादत ने पूरे बिहार में ऐसी आग लगाई कि आंदोलन रातों-रात सौ गुना और तेज हो गया। लोगों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। गाँवों से लेकर शहरों तक, इन सात शहीदों की वीरता के किस्से सुनाए जाने लगे। हर युवा के अंदर यह बात बैठ गई कि आजादी अब सिर्फ बातों से नहीं, बल्कि इन शहीदों की तरह लहू बहाकर ही मिलेगी।

शहीद होने वाले इन बच्चों में से ज्यादातर स्कूल और कॉलेज के छात्र थे, जिनकी पूरी जिंदगी और खूबसूरत भविष्य उनके सामने था। लेकिन जब देश और अपने निजी स्वार्थ के बीच चुनने की बात आई, तो उन्होंने बिना पलक झपकाए देश को चुना। यही वजह है कि आज इतने सालों बाद भी, इन सात शहीदों का नाम बिहार और पूरे देश के इतिहास में अमर है।

इस गोलीकांड के बाद अंग्रेजों के खिलाफ गुस्सा इतना बढ़ गया कि लोग हिंसक विरोध पर उतर आए। पटना सचिवालय की इस घटना ने देश के युवाओं को यह भरोसा दिला दिया कि उनका यह बलिदान खाली नहीं जाएगा और इन सात शहीदों के खून से ही देश की आजादी का नया सवेरा होगा।

पटना सचिवालय के सात शहीदों का विस्तृत परिचय : साल 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान पटना सचिवालय के सामने जो कुछ भी हुआ, वह महज पुलिस की गोलीबारी की एक घटना नहीं थी। वह हमारे देश के युवाओं के अदम्य साहस, अटूट देशभक्ति और बेमिसाल त्याग की एक जीती-जागती मिसाल थी। जिन सात लड़कों ने उस दिन भारत माता की गोद में अपनी आखिरी सांस ली, वे कोई रसूखदार लोग नहीं थे। वे बेहद साधारण और आम परिवारों के छात्र थे। उनके पास न तो कोई बड़ा राजनीतिक पद था और न ही कोई सत्ता, लेकिन उनकी आँखों में एक आजाद हिंदुस्तान का सपना बहुत बड़ा था।

इतिहास के पन्नों को पलटें तो पता चलता है कि शहीद होने वाले इन बच्चों में स्कूल और कॉलेज के कम उम्र के छात्र शामिल थे। वे सब पढ़ाई कर रहे थे, उनके माता-पिता ने उन्हें लेकर कई सपने संजोए थे। लेकिन जब बात देश की आजादी पर आई, तो उन्होंने अपने करियर, अपने परिवार और अपनी जिंदगी की परवाह छोड़ दी। इन नौजवानों का मानना था कि अगर हमारा देश ही गुलाम रहेगा, तो हमारी निजी तरक्की या खुशियों का कोई मोल नहीं रह जाएगा।

इन सातों वीरों की सबसे खास बात यह थी कि वे किसी लालच, नाम कमाने की चाह या राजनीति में आने के लिए इस आंदोलन में नहीं कूदे थे। वे सिर्फ इसलिए सड़कों पर उतरे क्योंकि उनके दिल की आवाज कह रही थी कि देश को इस वक्त उनकी जरूरत है। उनके भीतर अन्याय के खिलाफ खड़े होने का एक गजब का हौसला था।

जब सचिवालय की ऊँची इमारत पर तिरंगा फहराने की रणनीति बनी, तो इन लड़कों ने डरकर कदम पीछे खींचने के बजाय सबसे आगे खड़े होने की कसम खाई। वे अच्छी तरह जानते थे कि सामने बंदूकें तनी हैं और अंग्रेज पुलिस गोली चलाने से बाज नहीं आएगी, फिर भी उनके पैर नहीं डगमगाए। यह सिर्फ एक विरोध प्रदर्शन नहीं था, बल्कि फिरंगियों के मुंह पर यह तमाचा था कि भारत की नई पीढ़ी अब और गुलामी बर्दाश्त नहीं करेगी। उनकी शहादत ने यह साबित कर दिया कि देशभक्ति सिर्फ किताबों में नहीं होती, बल्कि उसे देश के लिए खून बहाकर साबित करना पड़ता है। यही वजह है कि आज भी पूरा बिहार इन सात शहीदों का नाम बेहद आदर और गर्व से लेता

है।

पटना सचिवालय के सात अमर शहीद :

1. **उमाकांत प्रसाद सिंह** (राम मोहन राय सेमिनरी स्कूल, पटना)
2. **रामानंद सिंह** (राम मोहन राय सेमिनरी स्कूल, पटना)
3. **सतीश प्रसाद झा** (पटना कॉलेजियेट स्कूल)
4. **जगतपति कुमार** (बिहार नेशनल कॉलेज, पटना)
5. **देवीपद चौधरी** (राम मोहन राय सेमिनरी स्कूल, पटना)
6. **राजेंद्र सिंह** (पटना हाई स्कूल)
7. **रामगोविंद सिंह** (पुनपुन हाई स्कूल)

राष्ट्रवादी चेतना और युवा नेतृत्व का विश्लेषण : अगर हम आजादी की इस पूरी लड़ाई को गहराई से समझें, तो एक बात साफ हो जाती है कि हमारे देश के युवा सिर्फ भीड़ बढ़ाने के लिए सड़कों पर नहीं उतर रहे थे। वे आंदोलन की रीढ़ थे। वे इस लड़ाई को आगे बढ़ा रहे थे, आम लोगों को जोड़ रहे थे और जब-जब आंदोलन कमजोर पड़ता, वे उसमें नई जान फूंक देते थे। साल 1942 के आंदोलन में युवाओं का यह नेतृत्व सबसे खुलकर सामने आया।

उस समय जैसे ही आंदोलन शुरु हुआ, अंग्रेजों ने सोची-समझी साजिश के तहत देश के सभी बड़े और सीनियर नेताओं को जेल में डाल दिया। अंग्रेजों को लगा कि नेता नहीं होंगे तो आंदोलन खुद-ब-खुद दम तोड़ देगा। लेकिन वे युवाओं की ताकत को भांप नहीं पाए। सीनियर नेताओं के जेल जाते ही इन छात्रों और स्थानीय नौजवानों ने खुद कमान संभाल ली। उन्होंने टोलियाँ बनाईं, गुप्त बैठकें कीं, पर्चे बांटे और अंग्रेजों की नाक में दम करके रख दिया।

युवाओं के भीतर देशप्रेम की यह भावना कोई एक दिन में नहीं जागी थी। इसके पीछे पढ़ाई-लिखाई, देश के अखबार, नेताओं के विचार और सबसे बढ़कर अंग्रेजों के बढ़ते जुल्म थे। इन युवाओं को समझ आ गया था कि गुलामी सिर्फ एक राजनीतिक मुद्दा नहीं है, बल्कि इसी गुलामी की वजह से हमारे देश के किसान, मजदूर, हमारी शिक्षा और हमारी संस्कृति सब बर्बाद हो रहे हैं।

पटना सचिवालय के ये सात शहीद इसी सोच का सबसे बड़ा प्रतीक हैं। इन्होंने दुनिया को दिखाया कि देशभक्ति सिर्फ मंच पर खड़े होकर भाषण देने या नारे लगाने का नाम नहीं है, बल्कि जरूरत पड़ने पर बंदूकों के आगे सीना तान देने का नाम है। इनकी कहानी यह साफ करती है कि आजादी की लड़ाई सिर्फ चुनिंदा बड़े नेताओं के कमरों में नहीं लड़ी जा रही थी, बल्कि देश के युवा अपने दम पर इतिहास बदल रहे थे। युवाओं के पास जोश था, ऊर्जा थी और कुछ भी कर गुजरने का जज्बा था, जिसके दम पर उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत को हिला कर रख दिया।

बिहार में इस घटना का प्रभाव : पटना सचिवालय का यह खूनी खेल सिर्फ पटना शहर तक सिमट कर नहीं रह गया। इसकी गूंज देखते ही देखते पूरे बिहार में फैल गई। जैसे-जैसे गाँवों और कस्बों में यह खबर पहुँची कि अंग्रेजों ने हमारे सात युवा छात्रों को गोलियों से भून दिया है, लोगों के दिलों में दुख और गुस्से का गुबार फूट पड़ा। इस घटना ने लोगों को डराने के बजाय अंग्रेजों के खिलाफ और ज्यादा एकजुट कर दिया। नौजवानों के बीच तो जैसे बारूद में चिंगारी लग गई। बिहार के अलग-अलग जिलों में छात्रों ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा और उग्र कर दिया। जगह-जगह सभाएं होने लगीं और जो लोग पहले खुलकर बोलने से कतराते थे, वे भी अब सड़कों पर उतर आए। हर तरफ एक ही बात गूंज रही थी कि जब स्कूल-कॉलेज के बच्चे देश के लिए जान दे सकते हैं, तो हम बड़े घरों में कैसे बैठ सकते हैं।

बिहार के सुदूर ग्रामीण इलाकों में भी इन सात शहीदों की वीरगाथाएं सुनाई जाने लगीं। लोग इन्हें अपने घरों के बच्चों की तरह देखने लगे और इनके बलिदान से प्रेरणा लेकर हजारों नए युवा आंदोलन में कूद पड़े। इस तरह, इस घटना ने बिहार के कोने-कोने में देशभक्ति की एक ऐसी लहर पैदा कर दी जिसे दबाना अंग्रेजों के बस में नहीं था। इस

घटना ने अंग्रेजी हुकूमत के उस क्रूर चेहरे को भी दुनिया के सामने ला दिया, जो खुद को बहुत सभ्य बताते थे। लोगों को साफ दिखने लगा कि अपनी कुर्सी बचाने के लिए यह सरकार निहत्थे बच्चों पर भी गोलियां चला सकती है। नतीजा यह हुआ कि आम जनता का अंग्रेजों पर से रहा-सहा भरोसा भी उठ गया और आजादी की मांग देश की सामूहिक जिद बन गई।

आलोचनात्मक अध्ययन (Critical Analysis) : पटना सचिवालय के सात शहीदों की इस कहानी को हम हमेशा वीरता और सम्मान के नजरिए से देखते हैं, लेकिन इतिहास का छात्र होने के नाते इसका एक निष्पक्ष और आलोचनात्मक मूल्यांकन करना भी बहुत जरूरी है। इतिहास सिर्फ तारीफ करने के लिए नहीं होता, बल्कि घटना के हर पहलू को बारीकी से समझने के लिए होता है।

- **जज्बात बनाम रणनीति:** यहाँ पहला सवाल यह उठता है कि क्या उन मासूम और निहत्थे छात्रों को इतनी खतरनाक स्थिति में आगे धकेलना सही था? कुछ इतिहासकारों का मानना है कि युवा कई बार भावनाओं में बहकर बहुत बड़ा जोखिम ले लेते थे, जिससे देश ने कई होनहार भविष्य खो दिए। लेकिन इसके उलट एक मजबूत तर्क यह भी है कि अगर उस दौर में युवाओं ने यह बेखौफ जज्बा नहीं दिखाया होता, तो शायद 'भारत छोड़ो आंदोलन' इतना बड़ा रूप ले ही नहीं पाता और अंग्रेज कभी भारत छोड़ने पर मजबूर नहीं होते।
- **इतिहास में स्थानीय नायकों की अनदेखी:** दूसरा बड़ा पहलू यह है कि हमारे देश के इतिहास में हमेशा दिल्ली या बड़े शहरों के राष्ट्रीय नेताओं को ही सबसे ज्यादा तवज्जो दी गई। जिन स्थानीय युवाओं ने अपनी जमीनों पर लहू बहाया, उन्हें इतिहास की किताबों में वह जगह नहीं मिली जिसके वे हकदार थे। पटना सचिवालय के इन सात शहीदों का यह अध्ययन इतिहास की इसी कमी को पूरा करने की एक छोटी सी कोशिश है।
- **आंदोलन का व्यापक रूप:** इसके साथ ही हमें यह भी समझना होगा कि यह घटना कोई अलग-थलग या अचानक हुई कोई झड़प नहीं थी। यह 'भारत छोड़ो आंदोलन' की उस महा-लड़ाई का हिस्सा थी, जिसने यह साफ कर दिया था कि अब आजादी की लड़ाई सिर्फ नेताओं के टेबल-टॉक (बातचीत) तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि देश का आम जनमानस और उसकी नई पीढ़ी इसके लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार हो चुकी है।

निष्कर्ष : कुल मिलाकर देखें तो भारत की आजादी की यह लड़ाई सिर्फ कुछ बड़े नेताओं या चुनिंदा राजनीतिक पार्टियों का काम नहीं थी। यह देश के आम लोगों—किसानों, महिलाओं, मजदूरों और सबसे बढ़कर हमारे नौजवानों के मिले-जुले संघर्ष का नतीजा थी। युवाओं ने इस पूरे आंदोलन में एक नए जोश, गजब के साहस और रफ्तार की तरह काम किया। उन्होंने सिर्फ भीड़ की तरह हिस्सा नहीं लिया, बल्कि कई मौकों पर तो वे खुद सेनापति बनकर खड़े हो गए। खास तौर पर जब आंदोलन सबसे कठिन दौर से गुजर रहा था और अंग्रेजों ने सभी बड़े नेताओं को जेल में ठूंस दिया था, तब इन्हीं छात्रों और युवाओं ने आंदोलन की मशाल को बुझने नहीं दिया।

साल 1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' इस मामले में सबसे खास माना जाता है। इस आंदोलन में युवाओं ने सिर्फ पीछे से सपोर्ट नहीं किया, बल्कि वे बंदूकों के आगे सबसे पहली कतार में सीना तानकर खड़े हो गए। बिहार में तो युवाओं का यह रूप और भी निखरकर सामने आया। यहाँ के छात्रों ने आजादी की इस राजनीतिक लड़ाई को समाज की सोच से जोड़ दिया और घर-घर से आम लोगों को खींचकर इस संघर्ष में शामिल कर लिया।

पटना सचिवालय के उन सात शहीदों की कहानी इस बात का सबसे बड़ा और जीता-जागता सबूत है कि आजादी की लड़ाई में युवाओं का त्याग कितना गहरा और दिल को छू लेने वाला था। सचिवालय की इमारत पर जाकर तिरंगा फहराने की जिद कोई बचकानी हरकत या सिर्फ एक दिखावा नहीं था, बल्कि वह अंग्रेजी हुकूमत की ताकत को उनके गढ़ में दी गई सीधी चुनौती थी। इस कोशिश में हंसते-हंसते अपनी जान गंवाने वाले उन सात लड़कों

ने दुनिया को दिखा दिया कि आजादी कोई भीख में मिलने वाली चीज नहीं है, इसे अपने साहस, संघर्ष और लहू के दम पर छीनना पड़ता है।

इस पूरे अध्ययन से एक बात साफ होती है कि युवाओं के भीतर देशप्रेम की यह भावना सिर्फ राजनीतिक भाषणों से नहीं आई थी। इसके पीछे उनके आस-पास के हालात, नई शिक्षा, समाज में लगातार फैल रही जागरूकता, अंग्रेजों के बढ़ते जुल्म और अपने देश के सम्मान को बचाने की छटपटाहट थी। युवाओं ने अपने दौर की नब्ज को समझा और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी से निभाया।

यहाँ यह भी समझना जरूरी है कि हमें आजादी के इतिहास को सिर्फ चंद बड़े और मशहूर नेताओं के नाम तक ही सीमित करके नहीं देखना चाहिए। हमारे इतिहास के असली हीरो वे स्थानीय युवा, छात्र और आम लोग भी हैं जिन्होंने जिला और गाँव के स्तर पर अपनी जान की बाजी लगा दी। पटना सचिवालय के इन सात शहीदों का यह अध्ययन हमें बताता है कि छोटे शहरों और स्थानीय स्तर पर भड़के आंदोलनों ने भी देश की आजादी की नींव को मजबूत करने में कितना बड़ा योगदान दिया था।

आज के दौर में भी यह ऐतिहासिक घटना हमारे नौजवानों के लिए एक बहुत बड़ी प्रेरणा है। माना कि आज हालात बदल चुके हैं, हमारे सामने वो चुनौतियाँ नहीं हैं, लेकिन अपने समाज और देश के प्रति जिम्मेदारी निभाना, गलत के खिलाफ आवाज उठाना, जागरूक रहना और देश को आगे ले जाने वाली लीडरशिप दिखाना आज भी उतना ही जरूरी है। इस नजरिए से देखें तो पटना सचिवालय के सात शहीद सिर्फ इतिहास की किताबों में दर्ज कोई तारीख नहीं हैं, बल्कि वे आज भी युवा चेतना और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी के सबसे बड़े प्रतीक हैं।

संदर्भ सूची (References / Bibliography) :

1. बिपन चंद्र, *भारत का स्वतंत्रता संघर्ष*, नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 1988, पृष्ठ संख्या 412।
2. सुमित सरकार, *आधुनिक भारत*, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2002, पृष्ठ संख्या 289।
3. तारा चंद, *भारत छोड़ो आंदोलन*, नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, 1975, पृष्ठ संख्या 165।
4. बिहार राज्य अभिलेखागार (State Archives), पटना, आजादी की लड़ाई से जुड़े दस्तावेज, फाइल नंबर: 1942/Patna/Secretariat।
5. रामचंद्र गुहा। *इंडिया आफ्टर गांधी* (India After Gandhi)। नई दिल्ली: पिकाडोर इंडिया, 2007।
6. तारा चंद। *भारत छोड़ो आंदोलन*। नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, 1975।
7. बिहार राज्य अभिलेखागार (Bihar State Archives), पटना। (स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े ऐतिहासिक रिकॉर्ड और सरकारी दस्तावेज)।
8. उस समय के समकालीन अखबार: *The Searchlight* और *The Indian Nation* (साल 1942 के मुख्य अंक)।
9. स्कूल और यूनिवर्सिटी स्तर की इतिहास की प्रामाणिक किताबें और इस विषय पर लिखे गए अन्य शोध पत्र।

•